C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय: 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×2=2) (2×3=6)**8**

महान रसायनशास्त्री आचार्य नागार्जुन को अपनी प्रयोगशाला के लिये दो सहायकों की आवश्यकता थी। अनेक युवक उनके पास आये और निवेदन किया कि वे उन्हें अपने सहायक के रुप में नियुक्त कर लें। लेकिन परीक्षा लेने पर सभी प्रत्याशी अयोग्य साबित हुए। अंत में आचार्य निराश हो गए। उनकी निराशा का कारण यह था कि युवकों में रसायनशास्त्र के ज्ञाता तो बहुत थे और अपने विषय से परिचित भी, लेकिन एक रसायनशास्त्री के लिए जो एक पवित्र ध्येय होता है, उसका सभी में अभाव था। प्रत्याशियों में से किसी को अपने वेतन की चिंता थी, किसी को अपने परिवार की, तो किसी को अपना भविष्य उज्ज्वल बनाना था। पर आचार्य नागार्जुन को ऐसे सहायक की आवश्यकता नहीं थी। उनके मन और विचार में कुछ और ही था। निराश होकर उन्होंने सहायक की आवश्यकता होते हुए भी स्वयं ही सारा कार्य करने का निश्चय कर लिया।

कुछ दिन बाद ही दो युवक आचार्य के पास आये। उन्होंने उनसे निवेदन किया कि वे उन्हें अपना सहायक नियुक्त कर लें। आचार्य ने पहले तो उन्हें लौटा देना चाहा, लेकिन युवकों के अधिक आग्रह पर उन्होंने उनकी परीक्षा लेने का निश्चय किया। आचार्य ने दोनों युवकों को एक पदार्थ देकर दो दिन

के भीतर ही उसका रसायन तैयार कर लाने को कहा। दोनों युवक पदार्थ लेकर अपने घर लौट गए।

दो दिन बाद एक युवक रसायन तैयार करके सुबह-सुबह ही उनके पास पहुँचा और रसायन का पात्र उन्हें देते हुए बोला "लीजिए आचार्य जी, रसायन तैयार है"। रसायन के पात्र की ओर बिना देखे ही आचार्य ने प्रश्न किया, "तो रसायन तैयार कर लिया तुमने?"

रसायन का पात्र एक ओर रखते हुए युवक ने कहा, "जी हाँ।" आचार्य ने दूसरा प्रश्न किया, "रसायन तैयार करते समय किसी भी प्रकार की कोई बाधा तो उपस्थित नहीं हुई?" युवक ने सकुचाते हुए उत्तर दिया, "बाधाएँ तो बहुत आई थीं, लेकिन मैंने किसी भी बाधा की चिंता किये बिना अपना कार्य चालू ही रखा तथा रसायन तैयार कर लिया। यदि मैं बाधाओं में उलझ गया होता, तो रसायन तैयार हो ही नहीं सकता था। एक ओर तो पिता के पेट में भयंकर शूल था, दूसरी ओर मेरी माता ज्वर से पीड़ित थी। ऊपर से मेरा छोटा भाई टांग तुड़वाकर पीड़ा से कराह रहा था। परन्तु ये बातें मुझे रसायन बनाने से विचलित नहीं कर सकीं।"

तभी दूसरा युवक खाली हाथ आकर वहाँ खड़ा हो गया। आचार्य जी ने उससे पूछा "रसायन कहाँ है?" युवक ने झिझकते हुए उत्तर दिया "आचार्यजी, मैं क्षमा चाहता हूँ। मैं रसायन तैयार नहीं कर सका क्योंकि जाते समय मार्ग में एक वृद्ध व्यक्ति मिल गया था। वह एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था। मेरा सारा समय उसकी सेवा में ही व्यतीत हो गया।"

आचार्य ने पहले युवक से कहा "तुम जा सकते हो। मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं। रसायनशास्त्री यदि पीड़ा से कराहते हुए व्यक्ति की उपेक्षा करे, तो वह अपने शास्त्र में अपूर्ण है।" दूसरे व्यक्ति को उन्होंने अपना सहायक नियुक्त कर लिया। भविष्य में वही युवक उनका दायाँ हाथ बना और उन्हें अति प्रिय लगने लगा।

1. आचार्य को कैसे सहायकों की आवश्यकता थी?
2. आचार्य की निराशा का क्या कारण था?
3. आचार्य ने दोनों युवकों की परीक्षा लेने का क्या उपाय सोचा तथा क्यों?

4. दूसरा युवक रसायन क्यों तैयार नहीं कर सका? इससे उसके चरित्र का कौन-सा गुण स्पष्ट होता है?
5. आचार्य ने अपना सहायक किसे और क्यों चुना?

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन-
थाल में लाऊँ सजाकर भाल में जब भी,
कर दया स्वीकार लेना यह समर्पण।

गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण-कण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँज दो तलवार को, लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया धनेरी।
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण-क्षण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो,
गाँव मेरी, द्वार-घर मेरी, आँगन, क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे-दो,

और बाएँ हाथ में ध्वज को थमा दो।

सुमन अर्पित, चमन अर्पित,
नीड़ का तृण-तृण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

1. कवि रामवतार त्यागी जी थाल में सजाकर क्या लाना चाहते हैं?
2. कवि कमर पर कसकर क्या बाँधना चाहता है?
3. कविता में व्यक्त कवि की भावना क्या हो सकती है?

प्र. 3 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

निज राष्ट्र के शरीर के सिंगार के लिए
तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो,
तुम कल्पना करो।
अब देश है स्वतंत्र, मेदिनी स्वतंत्र है
मधुमास है स्वतंत्र, चाँदनी स्वतंत्र है
हर दीप है स्वतंत्र, रोशनी स्वतंत्र है
अब शक्ति की ज्वलंत दामिनी स्वतंत्र है
लेकर अनन्त शक्तियाँ सद्य समृद्धि की-
तुम कामना करो, किशोर कामना करो,
तुम कल्पना करो।

1. प्रस्तुत पद्यांश में किस-किस की स्वतंत्रता की बात की है और क्यों?
2. निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए :
   निज, सिंगार, ज्वलंत, दामिनी।

खंड - ख

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए : 1

जादूगर, रंगत

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए : 1

आगमन, निर्गुण

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए : 1

दरअसल, सदाचारी

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : 1

नमकीन, सुनार

ड़) निम्नलिखित विग्रह का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखें : 3

1. शत अब्दों का समूह
2. देश और विदेश
3. पाँच हैं आनन जिसके

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए : 4

1. मैं नहीं जा सकूँगा।
2. अहा! कैसा सुंदर दृश्य है !
3. तुम सदैव स्वस्थ और प्रसन्न रहो।
4. शायद उसे कल बुखार था।

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए : 4

1. खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा।
2. देख लो साकेत नगरी है यही।
   स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।।
3. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के
4. वह नव नलिनी से नयन वाला कहाँ है?

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

सेनापति 'हे' कुछ क्षण ठहरकर बोले - "हाँ, मैंने तुम्हें, पहिचाना, कि तुम मेरी पुत्री मेरी की सहचरी हो ! किंतु मैं जिस सरकार का नौकर हूँ, उसकी आज्ञा नहीं टाल सकता। तो भी मैं तुम्हारी रक्षा का प्रयत्न करूँगा।"

इस समय प्रधान सेनापति जनरल अउटरम वहाँ आ पहुँचे, और उन्होंने बिगड़ कर सेनापति 'हे' से कहा - "नाना का महल अभी तक तोप से क्यों नहीं उड़ाया गया "

सेनापति 'हे' ने विनयपूर्वक कहा - "मैं इसी फ़िक्र में हूँ; किंतु आपसे एक निवेदन है। क्या किसी तरह नाना का महल बच सकता है?"

क) सेनापति ने किसको पहचान लिया?

ख) 'हे' किस सरकार के नौकर थे? 'हे' किस बात से चिंतित थे?

ग) जनरल अउटरम 'हे' पर क्यों बिगड़ उठा?

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4 = 8

1. किस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया?
2. आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?
3. लेखिका ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?
4. गुरुदेव ने शांतिनिकेतन को छोड़ कहीं ओर रहने का मन क्यों बनाया?

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
क्या दीमकों ने खा लिया हैं
सारी रंग बिरंगी किताबों को
क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें
क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
खत्म हो गए हैं एकाएक

1. गेंदों के अंतरिक्ष में गिरने के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
2. मदरसों से क्या आशय है? 'काले पहाड़' किसके प्रतीक हैं?
3. काव्यांश का मूलभाव क्या है?

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4= 8

1. बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललदय ने क्या उपाय सुझाया है?
2. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?
3. कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल क्यों नहीं हुई?
4. संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं?

प्र. 9. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। 4

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

- नर हो न निराश करो मन को
- इंटरनेट की दुनिया

प्र. 11. छात्रावास में रहने वाली अपनी छोटी बहन को फैशन की ओर अधिक रुझान न रख, ध्यानपूर्वक पढ़ाई करने की सीख देते हुए पत्र लिखिए। 5

प्र. 12. दो मित्रों के बीच वृक्षारोपण पर बातचीत पर संवाद लेखन लिखें : 5

सोमेश : नमस्कार नीरव! आप कैसे हो?

C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय: 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×2=2) (2×3=6)**8**

महान रसायनशास्त्री आचार्य नागार्जुन को अपनी प्रयोगशाला के लिये दो सहायकों की आवश्यकता थी। अनेक युवक उनके पास आये और निवेदन किया कि वे उन्हें अपने सहायक के रुप में नियुक्त कर लें। लेकिन परीक्षा लेने पर सभी प्रत्याशी अयोग्य साबित हुए। अंत में आचार्य निराश हो गए। उनकी निराशा का कारण यह था कि युवकों में रसायनशास्त्र के ज्ञाता तो बहुत थे और अपने विषय से परिचित भी, लेकिन एक रसायनशास्त्री के लिए जो एक पवित्र ध्येय होता है, उसका सभी में अभाव था। प्रत्याशियों में से किसी को अपने वेतन की चिंता थी, किसी को अपने परिवार की, तो किसी को अपना भविष्य उज्ज्वल बनाना था। पर आचार्य नागार्जुन को ऐसे सहायक की आवश्यकता नहीं थी। उनके मन और विचार में कुछ और ही था। निराश होकर उन्होंने सहायक की आवश्यकता होते हुए भी स्वयं ही सारा कार्य करने का निश्चय कर लिया।

कुछ दिन बाद ही दो युवक आचार्य के पास आये। उन्होंने उनसे निवेदन किया कि वे उन्हें अपना सहायक नियुक्त कर लें। आचार्य ने पहले तो उन्हें लौटा देना चाहा, लेकिन युवकों के अधिक आग्रह पर उन्होंने उनकी परीक्षा लेने का निश्चय किया। आचार्य ने दोनों युवकों को एक पदार्थ देकर दो दिन

के भीतर ही उसका रसायन तैयार कर लाने को कहा। दोनों युवक पदार्थ लेकर अपने घर लौट गए।

दो दिन बाद एक युवक रसायन तैयार करके सुबह-सुबह ही उनके पास पहुँचा और रसायन का पात्र उन्हें देते हुए बोला "लीजिए आचार्य जी, रसायन तैयार है"। रसायन के पात्र की ओर बिना देखे ही आचार्य ने प्रश्न किया, "तो रसायन तैयार कर लिया तुमने?"

रसायन का पात्र एक ओर रखते हुए युवक ने कहा, "जी हाँ।" आचार्य ने दूसरा प्रश्न किया, "रसायन तैयार करते समय किसी भी प्रकार की कोई बाधा तो उपस्थित नहीं हुई?" युवक ने सकुचाते हुए उत्तर दिया, "बाधाएँ तो बहुत आई थीं, लेकिन मैंने किसी भी बाधा की चिंता किये बिना अपना कार्य चालू ही रखा तथा रसायन तैयार कर लिया। यदि मैं बाधाओं में उलझ गया होता, तो रसायन तैयार हो ही नहीं सकता था। एक ओर तो पिता के पेट में भयंकर शूल था, दूसरी ओर मेरी माता ज्वर से पीड़ित थी। ऊपर से मेरा छोटा भाई टांग तुड़वाकर पीड़ा से कराह रहा था। परन्तु ये बातें मुझे रसायन बनाने से विचलित नहीं कर सकीं।"

तभी दूसरा युवक खाली हाथ आकर वहाँ खड़ा हो गया। आचार्य जी ने उससे पूछा "रसायन कहाँ है?" युवक ने झिझकते हुए उत्तर दिया "आचार्यजी, मैं क्षमा चाहता हूँ। मैं रसायन तैयार नहीं कर सका क्योंकि जाते समय मार्ग में एक वृद्ध व्यक्ति मिल गया था। वह एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था। मेरा सारा समय उसकी सेवा में ही व्यतीत हो गया।"

आचार्य ने पहले युवक से कहा "तुम जा सकते हो। मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं। रसायनशास्त्री यदि पीड़ा से कराहते हुए व्यक्ति की उपेक्षा करे, तो वह अपने शास्त्र में अपूर्ण है।" दूसरे व्यक्ति को उन्होंने अपना सहायक नियुक्त कर लिया। भविष्य में वही युवक उनका दायाँ हाथ बना और उन्हें अति प्रिय लगने लगा।

1. आचार्य को कैसे सहायकों की आवश्यकता थी?

उत्तर : आचार्य को पवित्र ध्येय वाले सहायकों की आवश्यकता थी।

2. आचार्य की निराशा का क्या कारण था?

उत्तर : आचार्य की निराशा का कारण युवकों में रसायनशास्त्र के ज्ञाता तो बहुत थे और अपने विषय से परिचित भी, लेकिन एक रसायनशास्त्री के लिए जो एक पवित्र ध्येय होता है, उसका सभी में अभाव था।

3. आचार्य ने दोनों युवकों की परीक्षा लेने का क्या उपाय सोचा तथा क्यों?

उत्तर : आचार्य ने दोनों युवकों को एक पदार्थ देकर दो दिन के भीतर ही उसका रसायन तैयार कर लाने को कहा। क्योंकि उनके पास अनेक युवक आए थे लेकिन परीक्षा लेने पर सभी प्रत्याशी अयोग्य साबित हुए। अंत में आचार्य निराश हो गए। इसलिए जब यह दो युवक ने उनसे निवेदन किया तो आचार्य ने परीक्षा लेने का निर्णय किया और रसायन देकर घर लौटा दिया।

4. दूसरा युवक रसायन क्यों तैयार नहीं कर सका? इससे उसके चरित्र का कौन-सा गुण स्पष्ट होता है?

उत्तर : वह रसायन तैयार नहीं कर सका क्योंकि जाते समय मार्ग में उसने एक वृद्ध व्यक्ति मिल गया था। वह एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था। उसका सारा समय उसकी सेवा में ही व्यतीत हो गया। इससे उसके सेवाभावी, दयालु और निस्वार्थ सेवा भाव का गुण स्पष्ट होता है।

5. आचार्य ने अपना सहायक किसे और क्यों चुना?

उत्तर : आचार्य ने अपना सहायक दूसरे व्यक्ति को चुना क्योंकि आचार्य के अनुसार रसायनशास्त्री यदि पीड़ा से कराहते हुए व्यक्ति की उपेक्षा करे, तो वह अपने शास्त्र में अपूर्ण है।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन-
थाल में लाऊँ सजाकर भाल में जब भी,
कर दया स्वीकार लेना यह समर्पण।

गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण-कण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँज दो तलवार को, लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया धनेरी।
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण-क्षण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो,
गाँव मेरी, द्वार-घर मेरी, आँगन, क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे-दो,
और बाएँ हाथ में ध्वज को थमा दो।

सुमन अर्पित, चमन अर्पित,
नीड़ का तृण-तृण समर्पित।

चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

1. कवि रामवतार त्यागी जी थाल में सजाकर क्या लाना चाहते हैं?
   उत्तर : कवि रामवतार त्यागी जी थाल में सजाकर भाल लाना चाहते हैं।

2. कवि कमर पर कसकर क्या बाँधना चाहता है?
   उत्तर : कवि कमर पर कसकर ढाल बाँधना चाहता है।

3. कविता में व्यक्त कवि की भावना क्या हो सकती है?
   उत्तर : कविता में व्यक्त कवि की भावना देशभक्ति की हो सकती है।

प्र. 3 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

निज राष्ट्र के शरीर के सिंगार के लिए
तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो,
तुम कल्पना करो।
अब देश है स्वतंत्र, मेदिनी स्वतंत्र है
मधुमास है स्वतंत्र, चाँदनी स्वतंत्र है
हर दीप है स्वतंत्र, रोशनी स्वतंत्र है
अब शक्ति की ज्वलंत दामिनी स्वतंत्र है
लेकर अनन्त शक्तियाँ सद्य समृद्धि की-
तुम कामना करो, किशोर कामना करो,
तुम कल्पना करो।

1. प्रस्तुत पद्यांश में किस-किस की स्वतंत्रता की बात की है और क्यों?
   उत्तर : कवि ने यहाँ पर आज़ादी के बाद की स्वतंत्रता की बात की है। कवि के अनुसार देश के स्वतंत्र होते ही हमें अनेक क्षेत्रों में आज़ादी मिल जाती है। देश की स्वतंत्रता के साथ ही आज वसंत ऋतु, चाँदनी, दीपक, रोशनी और शक्ति की ज्वलंत दामिनी भी

स्वतंत्र है। अत: कवि चाहते हैं कि इन सभी शक्तियों का उचित प्रयोग कर देश को और अधिक समृद्ध बनाया जाए।

2. निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए :
निज, सिंगार, ज्वलंत, दामिनी।
उत्तर : निज-अपना
सिंगार-साज-सज्जा
ज्वलंत-जलती हुई
दामिनी-बिजली

खंड - ख

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए : 1
जादूगर, रंगत
उत्तर : गर, त

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए : 1
आगमन, निर्गुण
उत्तर : आ, निर्

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए : 1
दरअसल, सदाचारी
उत्तर : दर+असल, सत्+आचारी

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : 1
नमकीन, सुनार
उत्तर : नमक + ईन, सोना +आर

ड़) निम्नलिखित विग्रह का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखें : 3

1. शत अब्दों का समूह
2. देश और विदेश
3. पाँच हैं आनन जिसके

विग्रह	समस्त पद	समास
शत अब्दों का समूह	शताब्दी	द्विगु
देश और विदेश	देश-विदेश	द्वंद्व
पाँच हैं आनन जिसके	पंचानन	बहुव्रीहि

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए : 4

1. मैं नहीं जा सकूँगा।
   उत्तर : निषेधवाचक वाक्य
2. अहा! कैसा सुंदर दृश्य है !
   उत्तर : विस्मयवाचक वाक्य
3. तुम सदैव स्वस्थ और प्रसन्न रहो।
   उत्तर : इच्छावाचक वाक्य
4. शायद उसे कल बुखार था।
   उत्तर : संदेहवाचक वाक्य

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए : 4

1. खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा।
   उत्तर : यमक अलंकार
2. देख लो साकेत नगरी है यही।
   स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।।
   उत्तर : अतिशयोक्ति अलंकार
3. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के
   उत्तर : मानवीकरण अलंकार

4. वह नव नलिनी से नयन वाला कहाँ है?

उत्तर : उपमा अलंकार

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

सेनापति 'हे' कुछ क्षण ठहरकर बोले - "हाँ, मैंने तुम्हें, पहिचाना, कि तुम मेरी पुत्री मेरी की सहचरी हो ! किंतु मैं जिस सरकार का नौकर हूँ, उसकी आज्ञा नहीं टाल सकता। तो भी मैं तुम्हारी रक्षा का प्रयत्न करूँगा।"

इस समय प्रधान सेनापति जनरल अउटरम वहाँ आ पहुँचे, और उन्होंने बिगड़ कर सेनापति 'हे' से कहा - "नाना का महल अभी तक तोप से क्यों नहीं उड़ाया गया "

सेनापति 'हे' ने विनयपूर्वक कहा - "मैं इसी फ़िक्र में हूँ; किंतु आपसे एक निवेदन है। क्या किसी तरह नाना का महल बच सकता है?"

क) सेनापति ने किसको पहचान लिया?

उत्तर : सेनापति ने मैना को पहचान लिया।

ख) 'हे' किस सरकार के नौकर थे? 'हे' किस बात से चिंतित थे?

उत्तर : 'हे' अंग्रेज सरकार के नौकर थे। 'हे' महल की रक्षा के लिए चिंतित थे।

ग) जनरल अउटरम 'हे' पर क्यों बिगड़ उठा?

उत्तर : जनरल अउटरम 'हे' पर बिगड़ उठा क्योंकि उन्होंने नाना साहब के महल को अब तक ध्वस्त नहीं किया था।

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4 = 8

1. किस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया?

उत्तर : एक बार बचपन में सालिम अली मामा की दी हुई एयरगन से खेल रहा था। उससे एक गौरैया घायल होकर गिर पड़ी। इस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया। सलिम ने मामा से जानकारी माँगनी चाही तो मामा ने उस नैचुरल हिस्ट्री सोसायटी (बी.एन.एच.एस) जाने के लिए कहा। वहाँ से उन्हें गौरैया की पूरी जानकारी मिली। वे गौरैया की देखभाल, सुरक्षा और खोजबीन में जुट गए। उसके बाद उनकी रूचि पूरे पक्षी-संसार की ओर मुड़ गयी। वे पक्षी-प्रेमी बन गए। पक्षी विज्ञान को ही अपना करीअर बना लिया।

2. आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?

उत्तर : आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को पूरी तरह प्रभावित कर रही है। आजकल उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रचार-प्रसार के कारण हमारी अपनी सांस्कृतिक पहचान, परम्पराएँ, आस्थाएँ घटती जा रही है। हमारे सामाजिक सम्बन्ध संकुचित होने लगा है। मन में अशांति एवं आक्रोश बढ़ रहे हैं। आज हर तंत्र पर विज्ञापन हावी है, परिणामत: हम वही खाते-पीते और पहनते-ओढ़ते हैं जो आज के विज्ञापन हमें कहते हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हम धीरे-धीरे उपभोगों के दास बनते जा रहे हैं। सारी मर्यादाएँ और नैतिकताएँ समाप्त होती जा रही हैं तथा मनुष्य स्वार्थ-केन्द्रित होता जा रहा है। विकास का लक्ष्य हमसे दूर होता जा रहा है। हम लक्ष्यहीन हो रहें हैं।

3. लेखिका ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर : महादेवी की माता अच्छे संस्कार वाली महिला थीं। वे धार्मिक स्वभाव की महिला थीं। वे पूजा-पाठ किया करती थीं। वे ईश्वर में आस्था रखती थीं। सवेरे "कृपानिधान पंछी बन बोले" पद गाती थीं। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा के पद गाती थीं। वे लिखा भी करती थीं। लेखिका ने अपनी माँ के हिंदी-प्रेम और लेखन-गायन के शौक का वर्णन किया है। उन्हें हिंदी तथा संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। इसलिए इन दोनों भाषाओं का प्रभाव महादेवी पर भी पड़ा।

4. गुरुदेव ने शांतिनिकेतन को छोड़ कहीं ओर रहने का मन क्यों बनाया?

उत्तर : गुरुदेव ने निम्नलिखित कारणों से शांतिनिकेतन को छोड़कर अन्यत्र रहने का मन बनाया -

१) उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था।

२) उन्हें आराम और शांति चाहिए थी, मिलने वाले लोगों की वजह से जो संभव नहीं हो रहा था।

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
क्या दीमकों ने खा लिया हैं
सारी रंग बिरंगी किताबों को
क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें
क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
खत्म हो गए हैं एकाएक

1. गेंदों के अंतरिक्ष में गिरने के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर : गेंदों के अंतरिक्ष में गिरने के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि इस उम्र में उन्हें काम पर नहीं भेजा जाना चाहिए। ये उनके खेलने-कूदने के दिन हैं।

2. मदरसों से क्या आशय है? 'काले पहाड़' किसके प्रतीक हैं?
उत्तर : मदरसों से आशय है - विद्यालय।'काले पहाड़' शोषण की व्यवस्था से संबंधित हैं।

3. काव्यांश का मूलभाव क्या है?
उत्तर : काव्यांश का मूलभाव बाल मजदूरी की विवशता पर आक्रोश करना है।

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4= 8

1. बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललदय ने क्या उपाय सुझाया है?
उत्तर : बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललदय ने उपाय सुझाया है कि भोग-विलास और त्याग के बीच संतुलन बनाए रखना, मनुष्य को सांसारिक विषयों में न तो अधिक लिप्त और न ही उससे विरक्त होना चाहिए बल्कि उसे बीच का मार्ग अपनाना चाहिए।

2. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?
उत्तर : बच्चे समाज का भविष्य, बच्चे समाज का भविष्य, आईना और देश की प्रगति का एक अहम् हिस्सा होते हैं। यदि समाज के इस सबसे महत्त्वपूर्ण अंग को यदि आप उचित देखभाल और अवसर प्रदान नहीं करेगें तो समाज प्रगति कैसे करेगा। सभी बच्चे एक समान होते हैं, उन्हें उनके बचपन से वंचित रखना अपने आप में घोर अपराध तथा अमानवीय कर्म है। इसलिए बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान है।

3. कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल क्यों नहीं हुई?

उत्तर : कवि को बचपन में माँ ने यह सिखाया था कि दक्षिण दिशा की ओर यमराज का घर होता है। अत: वहाँ पर कभी अपने पैर करके नहीं सोना उस तरफ़ पैर रखकर सोना यमराज को नाराज करने के समान है। माँ द्वारा मिली इस सीख के कारण कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल नहीं हुई।

4. संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं?

उत्तर : संगतकार जैसे व्यक्ति निम्नलिखित क्षेत्रों में मिलते हैं; जैसे -

1. सिनेमा के क्षेत्र में - फिल्म में अनेकों सह कलाकार, डुप्लीकेट, सह नर्तक व स्टंटमैन होते हैं।
2. भवन निर्माण क्षेत्र में - मज़दूर जो भवन का निर्माण करते हैं।

प्र. 9. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। 4

उत्तर : जिस प्रकार मानव में रीढ़ की हड्डी महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। ठीक उसी प्रकार वैवाहिक रिश्तों में लड़का और लड़की रीढ़ की हड्डी के समान होते हैं। उनके स्वस्थ रिश्ते पारिवारिक शांति,अपनापन और समृद्धि के कारण बनते है। इस पाठ के जरिए यही बताने का प्रयास किया गया है कि नर और नारी दोनों में ही समानता होनी चाहिए। नारी को कमतर समझ कर हम एक प्रगति शील समाज की कल्पना नहीं कर सकते। अत: यह उचित शीर्षक है।

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

नर हो न निराश करो मन को

जीवन में सफलता-असफलता, हानि-लाभ, जय-पराजय के अवसर मौसम के समान है, कभी कुछ स्थिर नहीं रहता। मनुष्य के जीवन में पल-पल परिस्थितियाँ बदलती रहती है। जीवन में कई बार असफलता का सामना करना पड़ता है। असफलता में निराश होने की बजाए उत्साह से कार्य किए जाए तो असफलता को भी सफलता में बदला जा सकता है। अब्राहम लिंकन भी अपने जीवन में कई बार असफल हुए और अवसाद में भी गए, किंतु उनके साहस और सहनशीलता के गुण ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ सफलता दिलाई। आशावान व्यक्ति के आगे भाग्य भी घूटने टेक देता है।
लहरों के डर से नौका पार नही होती, कोशिश करने वालों की हार नही होती।''

इंटरनेट की दुनिया

विज्ञान के अद्भूत चमत्कारों में से एक कंप्यूटर और इंटरनेट की सुविधा है। इस युग की रीढ़ की हड्डी है इंटरनेट। इंटरनेट की सुविधा ने ज्ञान के क्षेत्र में अद्भूत क्रांति ला दी है। हर विषय पर जानकारी प्राप्त करना आसान हो गया है। आज इंटरनेट ने दुनिया को जोड़ने का कार्य किया है। लोग मेल के माध्यम से अपने राज्य या देश से अन्य राज्य या देश में स्थिति कार्यालय से संपर्क स्थापित कर सकते हैं। इससे आने जाने में समय नष्ट नहीं होता और कार्य सुचारू रूप से चलता रहता है। आज इंटरनेट पर देश-विदेश की जानकारी, खेल, मौसम, फ़िल्म, विवाह करवाने, नौकरी करने, टिकट बुकिंग, खरीदारी सबकुछ बड़ी सहजता से संभव हो जाता है। बैंको, बिल, सूचना संबंधी आवश्यकताओं के लिए लोगों को लंबी कतार में खड़े होने की आवश्यकता नहीं रही है। सब कंप्यूटर के माध्यम से किया जा सकता है। विज्ञान की तरह इंटरनेट वरदान भी है और अभिशाप भी। इसका दुरुपयोग भी होता है - वाइरस, अश्लील तस्वीरे भेजना, बैंक में से

पैसे निकाल लेना आदि। सबको इंटरनेट के साथ-साथ उसका उचित उपयोग करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

प्र. 11. छात्रावास में रहने वाली अपनी छोटी बहन को फैशन की ओर अधिक रुझान न रख, ध्यानपूर्वक पढ़ाई करने की सीख देते हुए पत्र लिखिए। 5

सेवा में
संयोजक महोदय
विज्ञान-कार्यशाला
दिल्ली।

विषय - विज्ञान-कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मुझे आज ही पता चला है कि हमारे शहर के अमर मैदान में एक विज्ञान-कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। यह हर विज्ञान प्रेमी विद्यार्थी का आकर्षण का केंद्र हैं।

मैं महेश शर्मा कक्षा दसवीं का विदयार्थी हूँ। मैं इस विज्ञान कार्यशाला में सम्मिलित होना चाहता हूँ। मैंने मेरे मित्र के साथ मिलकर एक टेलीस्कोप दूरबीन बनाया है। आपकी विज्ञान शाला में आकर दूरबीन में उसमें आवश्यकता सुधार कर उसे विज्ञान-कार्यशाला में सम्मिलित करना चाहता हूँ।

आशा है आप मुझे इसकी अनुमति देंगे। मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।

धन्यवाद सहित।

भवदीय,
अमर पांडे।
दिनाँक - 20-10-2015

प्र. 12. दो मित्रों के बीच वृक्षारोपण पर बातचीत पर संवाद लेखन लिखें : 5

सोमेश : नमस्कार नीरव! आप कैसे हो ?

नीरव : नमस्कार ! मैं ठीक हूँ। आप बताओ, आपका क्या हालचाल है?

सोमेश : भाई आजकल तो हम वृक्षारोपण के कार्यक्रम में व्यस्त हैं।

नीरव : वृक्षारोपण!

सोमेश : हाँ वृक्षारोपण!

नीरव : कहाँ हो रहा है ये वृक्षारोपण?

सोमेश : मेरे विद्यालय के सामने काफी स्थान यूहीं बंजर पड़ा है। अत: हमारे प्राचार्य ने निश्चय किया कि इस बंजर भूमि को हरा-भरा बनाते हैं और इसलिए हम बच्चे स्कूल के बाद एक घंटे का श्रमदान करते हैं। अब तो सारी भूमि साफ़ हो गई है और कल वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

नीरव : ये तो बड़ी अच्छी बात है।

सोमेश : हाँ ! नीरव हमारे प्राचार्य द्वारा किया गए कार्य को सभी जगह सराहा जा रहा है।

नीरव : वो तो होना ही था।

सोमेश : तुम से मिलकर अच्छा लगा। अब चलता हूँ। अभी बहुत सारे काम करने हैं।

नीरव : अच्छा मित्र अलविदा।